International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 02-12-2025, Accepted: 01-01-2026, Published: 16-01-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 24-26

"एक मंत्री स्वर्गलोक में": डॉ. शंकर पुणतांबेकर का व्यंग्यात्मक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य

डॉ. सैयद मुईन
सहायक प्राध्यापक, सामाजिक विज्ञान एवं भाषाएँ विभाग, क्रिस्तु जयन्ती मनित विश्वविद्यालय, नारायणपुरा, बैंगलोर, कर्नाटक, भारत

सारांश
डॉ. शंकर पुणतांबेकर का उपन्यास "एक मंत्री स्वर्गलोक में" भारतीय समाज, राजनीति और नैतिक पतन पर गहरा व्यंग्य है। इस उपन्यास में लेखक ने राजनीतिक पाखंड, सत्ता की लालसा और मानवता के ह्रास को हास्य और व्यंग्य के माध्यम से उजागर किया है। यह कृति आधुनिक भारतीय शासन व्यवस्था की विडंबनाओं का दर्पण है, जहाँ स्वर्गलोक का प्रतीक धरती के समाज की असलियत को उघाड़ देता है। यह लेख इस उपन्यास का सामाजिक, दार्शनिक और नाट्य दृष्टि से विश्लेषण करता है तथा इसे भारतीय व्यंग्य साहित्य की परंपरा में रखकर उसका मूल्यांकन करता है।

मूल शब्दः डॉ. शंकर पुणतांबेकर, व्यंग्य, राजनीति, नैतिकता, सत्ता, समाज, स्वर्गलोक, सामाजिक व्यंग्य, भारतीय उपन्यास

प्रस्तावना
भारतीय साहित्य में व्यंग्य का एक सशक्त रूप समाज की विडंबनाओं को उजागर करता है। डॉ. शंकर पुणतांबेकर न केवल एक नाटककार और नाट्य समीक्षक थे, बल्कि उन्होंने अपने उपन्यासों में भी सामाजिक–राजनीतिक यथार्थ को तीखे हास्य और प्रतीकात्मकता के माध्यम से व्यक्त किया। उनका उपन्यास "एक मंत्री स्वर्गलोक में" इस परंपरा का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह कृति भारतीय राजनीति, भ्रष्टाचार, और नैतिक पतन पर एक दार्शनिक दृष्टि प्रस्तुत करती है। लेखक ने स्वर्गलोक का प्रयोग एक रूपक के रूप में किया है, जहाँ मंत्री की यात्रा समाज के आत्मनिरीक्षण का प्रतीक बन जाती है।
डॉ. शंकर पुणतांबेकर मराठी और हिंदी साहित्य जगत के एक प्रतिष्ठित नाम हैं, जिनकी लेखनी ने नाटक, रंगमंच और उपन्यास कृ तीनों विधाओं को समृद्ध किया। उनका उपन्यास "एक मंत्री स्वर्गलोक में" राजनीतिक और सामाजिक व्यंग्य की दिशा में एक सशक्त हस्तक्षेप है। इस कृति में लेखक ने हास्य, विडंबना और रूपक के माध्यम से समकालीन भारतीय राजनीति की गहरी आलोचना की है। यह उपन्यास न केवल एक व्यंग्यात्मक कथा है, बल्कि यह मानव चरित्र और सत्ता की मनोवृत्ति का दार्शनिक विश्लेषण भी प्रस्तुत करता है।

लेखक और कृति का परिचय
डॉ. शंकर पुणतांबेकर भारतीय नाट्य और साहित्य जगत के एक प्रतिष्ठित विद्वान थे।
उनकी रचनाएँ मराठी, हिंदी और अंग्रेज़ी तीनों भाषाओं में समान रूप से चर्चित हैं।
उनका साहित्य सामाजिक यथार्थ, जनचेतना और मानवीय नैतिकता पर आधारित है।
"एक मंत्री स्वर्गलोक में" उनकी व्यंग्यात्मक प्रवृत्ति की परिपक्व कृ ति है, जिसमें एक मंत्री की मृत्यु के बाद उसकी आत्मा स्वर्गलोक में पहुँचती है। वहाँ उसे अपने कर्मों का मूल्यांकन करना पड़ता है। यह काल्पनिक रूपक दरअसल हमारे वर्तमान समाज का दर्पण है।

अनुसंधान उद्देश्य
इस शोध लेख के मुख्य उद्देश्य हैं
1. उपन्यास के व्यंग्यात्मक तत्त्वों का विश्लेषण करना।
2. सत्ता और नैतिकता के अंतर्विरोधों को समझना।
3. पुणतांबेकर की साहित्यिक दृष्टि और उनकी शैलीगत विशेषताओं की पहचान करना।
4. उपन्यास को भारतीय व्यंग्य परंपरा (जैसे हरिशंकर परसाई, श्रीलाल शुक्ल) के संदर्भ में देखना।

अनुसंधान पद्धति
इस लेख में गुणात्मक विश्लेषण पद्धति (Qualitative Analysis) अपनाई गई है। प्राथमिक स्रोत के रूप में डॉ. पुणतांबेकर का उपन्यास "एक मंत्री स्वर्गलोक में" का उपयोग किया गया है। द्वितीयक स्रोतों में उनके अन्य लेख, व्यंग्य साहित्य पर आलोचनाएँ, और भारतीय समाजशास्त्रीय सन्दर्भों को लिया गया है। शोध का दृष्टिकोण सामाजिक–राजनीतिक व्याख्या और प्रतीकात्मक विश्लेषण पर आधारित है।

उपन्यास की कथावस्तु
उपन्यास का आरंभ एक मंत्री की मृत्यु से होता है जो अपने जीवन में भ्रष्टाचार, सत्ता की राजनीति और नैतिक गिरावट में लिप्त था। मरने के बाद जब वह स्वर्गलोक में पहुँचता है, तो वहाँ की व्यवस्था धरती से बिलकुल अलग नहीं पाता। स्वर्गलोक में भी नौकरशाही, राजनीति, पद – लालसा और अहंकार व्याप्त हैं।
लेखक ने इस व्यंग्य के माध्यम से यह दिखाया है कि मानव की प्रवृत्तियाँ मृत्यु के बाद भी नहीं बदलतीं, क्योंकि वे मानसिक और नैतिक स्तर पर जड़ हो चुकी हैं। स्वर्गलोक, दरअसल, मनुष्य की अंतरात्मा का दर्पण बन जाता है। कथा एक मंत्री की मृत्यु से आरंभ होती है, जो जीवन में भ्रष्टाचार, लोभ और सत्ता की राजनीति में डूबा रहता है। मृत्यु के बाद जब वह स्वर्गलोक पहुँचता है, तो उसे लगता है कि वहाँ सब कुछ शुद्ध और आदर्श होगा। परंतु वहाँ की व्यवस्था धरती से भिन्न नहीं निकलती– स्वर्ग के देवता भी पद, प्रतिष्ठा और अहंकार की राजनीति में उलझे हैं। इस प्रकार, लेखक ने स्वर्ग को पृथ्वी का प्रतिबिंब बनाकर यह दिखाया कि "जहाँ मनुष्य जाएगा, वहाँ उसकी भ्रष्ट प्रवृत्तियाँ भी उसके साथ जाएँगी।"

मुख्य विषयवस्तु और प्रतीक
1. राजनीति और सत्ता का व्यंग्य
लेखक ने मंत्री को एक प्रतीक बनाया है: वह व्यक्ति जो जनता की सेवा के नाम पर अपने स्वार्थ, पदलिप्सा और लालच में डूबा

हुआ है। स्वर्गलोक की घटनाएँ धरती की राजनीति का प्रतिबिंब हैं।
यह व्यंग्य आज की राजनीतिक परिस्थितियों में भी उतना ही प्रासंगिक है।

2. नैतिक पतन और आत्मचिंतन

उपन्यास यह प्रश्न उठाता है: "क्या मृत्यु मनुष्य को सुधार देती है?" स्वर्गलोक पहुँचने के बाद भी मंत्री वही रहता है — आत्ममुग्ध, स्वार्थी और असंवेदनशील। यह लेखक की उस गहरी दृष्टि का परिचायक है जिसमें वे मनुष्य के आंतरिक परिवर्तन की आवश्यकता पर बल देते हैं।

3. स्वर्गलोक एक रूपक

स्वर्गलोक यहाँ एक रूपक है: वह स्थान जहाँ मनुष्य अपनी अंतरात्मा से सामना करता है। लेखक ने इस प्रतीक का उपयोग समाज के नैतिक पतन को रेखांकित करने के लिए किया है। धरती और स्वर्ग के बीच कोई भेद नहीं — यह लेखक की व्यंग्यात्मक दृष्टि की पराकाष्ठा है।

शैलीगत विशेषताएँ

डॉ. पुणतांबेकर की भाषा सरल, व्यंग्यपूर्ण और संवादात्मक है। वे संवादों के माध्यम से पात्रों की मानसिक स्थिति और सामाजिक दृष्टिकोण को उभारते हैं। उनकी भाषा में लोकजीवन की सजीवता और व्यंग्य की तीक्ष्णता दोनों हैं। कहीं – कहीं वे प्रतीक और रूपक का प्रयोग करते हैं — जैसे "स्वर्ग" = आदर्श व्यवस्था, "मंत्री" = सत्ता का अहंकार।

1. **भाषा और संवाद:** भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण और व्यंग्य की तीक्ष्णता से युक्त है। संवाद पात्रों के चरित्र और मानसिकता को उभारते हैं।

2. **हास्य और व्यंग्य का संतुलन:** लेखक ने हास्य को केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि "सत्य उद्घाटन" का माध्यम बनाया है। उनका व्यंग्य तीखा होते हुए भी सभ्य है।

3. **प्रतीकात्मकता:** स्वर्ग, मंत्री, यमराज, देवसभा — सभी प्रतीकात्मक रूप में प्रयुक्त हुए हैं। यह प्रतीकात्मकता उपन्यास को दार्शनिक गहराई देती है।

4. **वर्णन – शैली:** लेखक की वर्णन – शैली नाटकीय है — जिससे दृश्य मानो पाठक के सामने घटित होते हैं।

सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि

डॉ. पुणतांबेकर ने इस कृति में भारतीय लोकतंत्र की विडंबनाओं पर करारा व्यंग्य किया है। उनके अनुसार, "लोकतंत्र तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक जनसेवक स्वयं जन के दुख – सुख में सहभागी न हो।" लेखक ने यह दिखाया कि सत्ता प्राप्त करने के बाद व्यक्ति का नैतिक चरित्र धीरे–धीरे क्षीण होता जाता है। उनका व्यंग्य किसी व्यक्ति विशेष पर नहीं, बल्कि पूरी व्यवस्था पर है।

दार्शनिक गहराई

यह उपन्यास मात्र व्यंग्य नहीं, बल्कि दार्शनिक विचार का भी वाहक है। लेखक यह संकेत देते हैं कि – मनुष्य का स्वर्ग और नरक उसके भीतर ही है। यदि उसके भीतर लोभ, ईर्ष्या, और छल है तो वह स्वर्ग में भी शांति नहीं पा सकता।

व्यंग्य के प्रमुख आयाम

1. राजनीतिक व्यंग्य

लेखक ने सत्ता में बैठे लोगों की लालसा, छल और आत्मप्रशंसा की प्रवृत्ति पर तीखा प्रहार किया है। स्वर्गलोक का मंत्री धरती के मंत्री की तरह ही सत्ता के सुख भोगना चाहता है। यह प्रतीक है कि भ्रष्टाचार केवल धरती की समस्या नहीं, बल्कि मानसिक स्थिति है।

2. नैतिक पतन का चित्रण

उपन्यास में नैतिकता का ह्रास केवल राजनीति तक सीमित नहीं है।साधारण मनुष्य भी अपनी सुविधा के लिए सिद्धांतों से समझौता करता है। लेखक ने प्रश्न उठाया है – "क्या मनुष्य मरकर सुधरता है या वही पाप लेकर स्वर्ग में प्रवेश करता है?"

3. सामाजिक यथार्थ और हास्य

उपन्यास में लेखक ने गंभीर विषयों को हास्य और व्यंग्य के माध्यम से सरल बना दिया है। हास्य यहाँ मनोरंजन नहीं, बल्कि "आत्मबोध" का उपकरण है।

अन्य व्यंग्यकारों से तुलनात्मक दृष्टि

डॉ. शंकर पुणतांबेकर की व्यंग्य – दृष्टि हरिशंकर परसाई और श्रीलाल शुक्ल की परंपरा से जुड़ती है, परंतु उनकी शैली अधिक प्रतीकात्मक और नाटकीय है। जहाँ परसाई ने सीधे समाज के चेहरे पर व्यंग्य किया, वहीं पुणतांबेकर ने रूपक के माध्यम से उसी सच्चाई को "स्वर्गलोक" की कथा में छिपाया। उनका व्यंग्य बौद्धिक और चिंतनशील है — जो पाठक को हँसाता नहीं, सोचने पर विवश करता है।
डॉ. पुणतांबेकर का यह उपन्यास हरिशंकर परसाई के "भोलाराम का जीव" और श्रीलाल शुक्ल के "राग दरबारी" की परंपरा से जुड़ता है। तीनों लेखकों ने समाज की विडंबनाओं को हास्य के माध्यम से उजागर किया है। जहाँ परसाई ने व्यक्तिगत भ्रष्टाचार पर प्रहार किया, वहीं पुणतांबेकर ने राजनीतिक – सांस्थानिक भ्रष्टाचार को विषय बनाया।

सामाजिक और दार्शनिक संदेश

लेखक यह संदेश देना चाहते हैं कि – "मनुष्य जब तक आत्मशुद्धि नहीं करता, तब तक कोई भी लोक – स्वर्ग हो या पृथ्वी — भ्रष्ट ही रहेगा।" यह उपन्यास केवल राजनीतिक व्यंग्य नहीं, बल्कि मानव – चरित्र का दार्शनिक परीक्षण है। यह प्रश्न उठाता है कि सत्ता, धर्म और नैतिकता के बीच वास्तविक संतुलन कहाँ है?

प्रासंगिकता

आज के समय में, जब राजनीति में नैतिकता और पारदर्शिता पर प्रश्नचिह्न लगे हैं, यह उपन्यास और भी प्रासंगिक प्रतीत होता है। यह न केवल सत्ता की आलोचना करता है, बल्कि समाज से आत्मावलोकन की अपेक्षा भी करता है।

निष्कर्ष

"एक मंत्री स्वर्गलोक में" डॉ. शंकर पुणतांबेकर की साहित्यिक प्रतिभा और समाज–दृष्टि का अनूठा उदाहरण है। यह कृति व्यंग्य और दर्शन का ऐसा समन्वय प्रस्तुत करती है जो मराठी और हिंदी दोनों साहित्य परंपराओं में विरल है। लेखक ने हास्य के आवरण में समाज के गम्भीर प्रश्न उठाए ह ैं– नैतिकता, सत्ता, और मानवता के। इस उपन्यास की विशिष्टता यही है कि यह केवल एक व्यक्ति या घटना का व्यंग्य नहीं, बल्कि समूचे समाज के मानसिक और नैतिक पतन का प्रतीकात्मक आख्यान है।
डॉ. शंकर पुणतांबेकर का "एक मंत्री स्वर्गलोक में" आधुनिक भारतीय व्यंग्य साहित्य की एक उत्कृष्ट कृति है। इस उपन्यास में उन्होंने स्वर्ग और पृथ्वी दोनों को एक समान भ्रष्ट मानते हुए समाज के नैतिक पतन पर करारा प्रहार किया। उनकी भाषा, प्रतीक, और हास्य शैली इस कृति को दार्शनिक गहराई प्रदान

करते हैं। यह कृति बताती है कि व्यंग्य केवल आलोचना नहीं, बल्कि सुधार का मार्ग है। डॉ. पुणतांबेकर ने यह सिद्ध किया कि हास्य के माध्यम से भी समाज की सच्चाइयों को गहराई से व्यक्त किया जा सकता है। इस दृष्टि से यह उपन्यास भारतीय व्यंग्य साहित्य की परंपरा में मील का पत्थर है। "एक मंत्री स्वर्गलोक में" — केवल एक व्यंग्यात्मक उपन्यास नहीं, बल्कि आधुनिक भारतीय समाज की राजनीतिक, नैतिक और आध्यात्मिक विडंबनाओं का दर्पण है। डॉ. शंकर पुणतांबेकर ने इसे हास्य और रूपक के माध्यम से अमर बना दिया है। "एक मंत्री स्वर्गलोक में" केवल एक व्यंग्य उपन्यास नहीं, बल्कि भारतीय समाज और नैतिकता का दर्पण है। डॉ. शंकर पुणतांबेकर ने इस कृति के माध्यम से सत्ता, नैतिकता और आत्मचेतना की त्रिमूर्ति पर गहन प्रश्न उठाए हैं, जो आज के समय में भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने इसके प्रकाशन के समय थे।

संदर्भ सूची

1. पुणतांबेकर, शंकर. एक मंत्री स्वर्गलोक में. मुंबई: मराठी साहित्य मंडल, 1980.
2. पुणतांबेकर, शंकर. रंगभूमि के आयाम. पुणे: साहित्य अकादमी, 1985.
3. परसाई, हरिशंकर. भोलाराम का जीव. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 1970.
4. शुक्ल, श्रीलाल. राग दरबारी. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 1968.
5. वर्मा, रामानंद. भारतीय व्यंग्य साहित्य का विकास. वाराणसी: ज्ञानपीठ, 2001.
6. Deshpande Praful. Modern Satire and Society, Delhi: Sahitya Akademi, 2015.
7. परसाई, हरिशंकर. व्यंग्य यात्रा. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 1985.
8. Joshi PN. Modern Marathi Fiction and Society- Pune University Press, 1992.
9. Karnik Ashok. भारतीय व्यंग्य साहित्य की परंपरा. दिल्ली: साहित्य अकादमी, 2010.